

मूल्यों को विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका

डॉ. विजय लक्ष्मी शर्मा

सहायक प्रोफेसर

हिंदी विभाग, सरकारी कॉलेज, धौलपुर (राजस्थान).

सार:

परिवार, जिसे प्रायः प्राथमिक सामाजिक इकाई माना जाता है, व्यक्ति के नैतिक ढाँचे को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार में ही नैतिक मूल्यों, सिद्धांतों और चरित्र की नींव रखी जाती है। पारिवारिक परिवेश में स्थापित मूल्य अक्सर व्यापक सामाजिक मानदंडों और सांस्कृतिक विरासत को प्रतिबिंबित करते हैं। ये मूल्य न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक कल्याण पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। मूल्य वे सिद्धांत और विश्वास हैं जो व्यवहार, निर्णयों और अंतःक्रियाओं का मार्गदर्शन करते हैं। ये व्यक्ति के चरित्र की आधारशिला और एक सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण खंड के रूप में कार्य करते हैं। ईमानदारी, करुणा, सम्मान और जिम्मेदारी जैसे मूल्य न केवल व्यक्ति की पहचान को आकार देते हैं, बल्कि सामाजिक सामंजस्य और प्रगति को भी बढ़ावा देते हैं। यह लेख इस बात की पड़ताल करता है कि ये तीन स्तंभ मूल्यों को स्थापित करने में कैसे योगदान करते हैं, उनके अनूठे प्रभाव को दर्शाते हैं और आज की तेज़ी से बदलती दुनिया में उनके सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करते हैं। इस आलेख में हम मूल्यों के विकास में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका पर चर्चा करेंगे।

बीज शब्द: परिवार, समाज, शैक्षणिक, मूल्यों, सिद्धांतों, व्यक्तित्व, आदर्श व्यवहार, छात्रों, समाजीकरण

परिचय:

मूल्य:

मूल्य मूलभूत एवं मौलिक विश्वास हैं जो दृष्टिकोण या कार्यों को निर्देशित या प्रेरित करते हैं। मूल्य वे "चीज़ें हैं जिनका स्वामी के लिये उपयोगिता या महत्व में अंतर्निहित मूल्य होता है" या "सिद्धांत, मानक या गुण जो सार्थक या वांछनीय माने जाते हैं।"

मूल्य आत्म-जागरूकता का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं तथा व्यक्ति के लिये मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करते हैं। [१]

परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थान किसी व्यक्ति के चरित्र या व्यक्तित्व के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संस्थान व्यक्ति को मूल्य प्रदान करते हैं और समाज में एक बेहतर इंसान बनने में उसकी मदद करते हैं। व्यक्ति वही सीखता है जो वह सुनता है। छोटे बच्चे अपने आस-पास जो देखते हैं, उसे बहुत अच्छी तरह सीखते हैं। अगर वे अच्छा देखते हैं, तो वे अच्छा सीखते हैं और अगर वे बुरा देखते हैं, तो वे उसे भी सीखते हैं। परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्ति वहीं रहता है और वहीं से सीखता है, समाज व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है और शैक्षणिक संस्थान वह स्थान हैं जहाँ व्यक्ति सीखता है। अब हम देखेंगे कि ये कारक व्यक्ति में मूल्यों को विकसित करने में कैसे मदद करते हैं।

मूल्यों को विकसित करने में परिवार की भूमिका

परिवार बच्चे के विकास पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है और उनके मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। माता-पिता और देखभाल करने वाले ईमानदारी, दयालुता और ज़िम्मेदारी जैसे मूल्यों को सिखा सकते हैं और उनका अनुकरण कर सकते हैं, और एक सकारात्मक और सहायक घरेलू वातावरण भी बना सकते हैं जो इन मूल्यों के विकास को बढ़ावा देता है।

मूल्य संचार में परिवार की भूमिका

आदर्श व्यवहार: परिवार के सदस्य, विशेषकर माता-पिता, आदर्श के रूप में कार्य करते हैं। बच्चे विभिन्न परिस्थितियों में उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और प्रतिक्रियाओं का अवलोकन और अनुकरण करके सीखते हैं।

संचार और चर्चा: परिवार के भीतर नैतिक दुविधाओं और नैतिक मुद्दों पर खुली और ईमानदार चर्चाएँ आलोचनात्मक सोच और नैतिक तर्क को बढ़ावा दे सकती हैं।

परंपराएँ और अनुष्ठान: पारिवारिक परंपराएँ और अनुष्ठान अक्सर नैतिक निहितार्थ रखते हैं और बच्चों को सम्मान, ज़िम्मेदारी और सामुदायिक कल्याण जैसे मूल्यों के बारे में सिखाते हैं।

अनुशासन और मार्गदर्शन: माता-पिता द्वारा उपयोग की जाने वाली अनुशासन रणनीतियाँ, जैसे तर्क, सुदृढ़ीकरण और सीमाएँ निर्धारित करना, बच्चों को निष्पक्षता, न्याय और दूसरों के प्रति सम्मान सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। [२]

मूल्य संचार में समाज की भूमिका

जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारा सामाजिक दायरा भी विस्तृत होता जाता है। अब हम न केवल परिवार, बल्कि समाज का भी हिस्सा बन जाते हैं। मूल्यों के विकास में समाज की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब बच्चा बड़ा होता है, तो वह बाहर जाकर दोस्त बनाता है और एक-दूसरे के विचारों को साझा करता है। समाज व्यक्ति के चरित्र का निर्माण भी करता है। समाज कुछ परंपराओं और रीति-रिवाजों का पालन करता है और समाज का हिस्सा होने के नाते, हम भी इन रीति-रिवाजों और परंपराओं का हिस्सा हैं। ये रीति-रिवाज और परंपराएँ पीढ़ियों से चली आ रही हैं और ये निष्ठा, साहस, प्रेम और भाईचारे जैसे मूल्यों

पर आधारित हैं। हम प्रेम और खुशी के प्रतीक विभिन्न त्योहारों को एक साथ मनाते हैं। हम न केवल एक परंपरा या धर्म के त्योहार मनाते हैं, बल्कि इतने विविध देश का हिस्सा होने के नाते हमें विभिन्न धर्मों के त्योहारों और रीति-रिवाजों का आनंद लेने का अवसर मिलता है, जो एक-दूसरे के प्रति और समाज के विभिन्न व्यक्तियों के प्रति परस्पर सम्मान दर्शाता है। हमारे भारतीय समाज में धर्म एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है और ये धर्म सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े होते हैं। समाज सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करता है, हमारे समाज में मौजूद विविधता आपसी प्रेम और सम्मान सिखाती है और विभिन्न मूल्यों और व्यक्तियों के समग्र विकास को बढ़ावा देती है। सामाजिक प्रभाव और समाज में एक प्रेरक व्यक्तित्व बनने की इच्छा व्यक्ति में अच्छे मूल्यों को विकसित करने में मदद करती है। [3]

मूल्यों के विकास में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका

शैक्षणिक संस्थान और मूल्यों का विकास

शैक्षणिक संस्थान छात्रों में मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, न केवल उनके शैक्षणिक ज्ञान को बल्कि उनके चरित्र, नैतिकता और सामाजिक मानदंडों की समझ को भी आकार देते हैं। यह प्रक्रिया ऐसे सर्वांगीण व्यक्तियों के विकास के लिए अभिन्न है जो समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें। इस संदर्भ में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका को विभिन्न आयामों और उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है:

१. पाठ्यक्रम संरचना

शैक्षणिक संस्थान अपने पाठ्यक्रम को सावधानीपूर्वक डिज़ाइन करते हैं जिसमें ऐसे विषय और विषय शामिल होते हैं जो ईमानदारी, सम्मान, जिम्मेदारी और सहानुभूति जैसे मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक अध्ययन या नैतिकता जैसे विषय नैतिक मूल्यों और नैतिक दुविधाओं पर स्पष्ट रूप से चर्चा करते हैं, जिससे छात्रों को अपने विश्वासों और व्यवहारों पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

२. पाठ्येतर गतिविधियाँ

क्लबों, खेलों और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों के माध्यम से, छात्र टीम वर्क, निष्पक्षता, नेतृत्व और दृढ़ता के बारे में सीखते हैं। उदाहरण के लिए, टीम स्पोर्ट्स में भाग लेने से छात्रों को सहयोग, विरोधियों के प्रति सम्मान और कड़ी मेहनत का महत्व सिखाया जाता है।

३. सामुदायिक सेवा और सहभागिता

कई स्कूल और कॉलेज छात्रों से सामुदायिक सेवा परियोजनाओं में भाग लेने की अपेक्षा करते हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को विविध सामाजिक आवश्यकताओं से परिचित कराती हैं और उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व और सहानुभूति की भावना पैदा करती हैं। उदाहरण के लिए, किसी स्थानीय फूड बैंक में स्वयंसेवा करने से छात्रों को करुणा और ज़रूरतमंदों की मदद करने के महत्व के बारे में सिखाया जा सकता है।

४. शिक्षकों द्वारा रोल मॉडल

शिक्षक और कर्मचारी छात्रों के लिए रोल मॉडल के रूप में कार्य करते हैं। उनका व्यवहार, दृष्टिकोण और छात्रों और एक-दूसरे के साथ बातचीत छात्रों द्वारा अपनाए जाने वाले मूल्यों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। एक शिक्षक जो कक्षा में सम्मान और निष्पक्षता का प्रदर्शन करता है, वह छात्रों के लिए अनुकरणीय एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

५. स्कूल की नीतियाँ और वातावरण

एक शैक्षणिक संस्थान की नीतियाँ और वातावरण कुछ मूल्यों को प्रतिबिंबित और सुदृढ़ करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी स्कूल की बदमाशी-विरोधी नीति और कार्यक्रम सम्मान और दयालुता की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। इसी तरह, समावेशिता और विविधता को प्रोत्साहित करने वाली नीतियाँ छात्रों को मतभेदों को समझने और उनका सम्मान करने का महत्व सिखाती हैं।

६. छात्र नेतृत्व और प्रशासन

छात्र नेतृत्व के अवसर, जैसे छात्र परिषदें या सहकर्मी मार्गदर्शन कार्यक्रम, छात्रों को ज़िम्मेदारियाँ लेने और अपने समुदाय को प्रभावित करने वाले निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाते हैं। इससे लोकतंत्र, जवाबदेही और नेतृत्व जैसे मूल्यों को बढ़ावा मिलता है। उदाहरण के लिए, एक छात्र परिषद द्वारा पुनर्चक्रण कार्यक्रम आयोजित करने से छात्र समुदाय में पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी को बढ़ावा मिलता है।

७. संवाद और चर्चा

शैक्षणिक संस्थान अक्सर समसामयिक घटनाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और नैतिक दुविधाओं पर चर्चाओं को बढ़ावा देते हैं, जिससे छात्रों को अपनी राय व्यक्त करने, दूसरों की बात सुनने और आलोचनात्मक सोच व सहानुभूति विकसित करने का एक मंच मिलता है। उदाहरण के लिए, किसी महत्वपूर्ण वैश्विक घटना के बाद कक्षा में होने वाली चर्चाएँ छात्रों को दुनिया की जटिलताओं और सहिष्णुता एवं शांति के महत्व को समझने में मदद कर सकती हैं।

८. वैश्विक और सांस्कृतिक शिक्षा

पाठ्यक्रम में वैश्विक और सांस्कृतिक शिक्षा को शामिल करके, स्कूल छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और विश्वदृष्टि से परिचित कराते हैं, विविधता के प्रति प्रशंसा को बढ़ावा देते हैं और एक वैश्विक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, विनिमय कार्यक्रम या अंतर्राष्ट्रीय दिवस समारोह छात्रों की विभिन्न संस्कृतियों की समझ और स्वीकृति को व्यापक बना सकते हैं। [४-५]

साहित्य की समीक्षा:

सामाजिक मूल्य उन आधारों, मानकों और सिद्धांतों को समाहित करते हैं जो जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति व्यक्ति के विश्वासों और निर्णयों को आकार देते हैं [६]। ये व्यक्ति के विवेक को प्रतिबिंबित करते हैं और समाज के साथ उसके अंतःक्रिया को प्रभावित करते हैं, सामाजिक मुद्दों के समाधान में रुचि और भागीदारी को बढ़ावा देते हैं। प्रमुख सामाजिक मूल्यों में करुणा, विश्वास, लोकतंत्र, सहयोग और सामाजिक एकजुटता शामिल हैं सामाजिक मूल्य उन मानकों और लक्ष्यों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो विकास के

विभिन्न चरणों में समाजों में विद्यमान होते हैं, और मानवीय प्रतिबद्धता और सामाजिक आवश्यकता के रूप में कार्य करते हैं। वे मानवीय अनुभव का अभिन्न अंग हैं, क्योंकि वे व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार के मूल्यांकन के लिए एक ढाँचा प्रदान करते हैं

परिवार, समाज और राज्य के मूल्य शिक्षक के इर्द-गिर्द विकसित और प्रसारित होते हैं। हालाँकि, यह बड़े खेद की बात है कि हमारे देश में दिन-प्रतिदिन अनेक शिक्षण संस्थान स्थापित हो रहे हैं, हजारों शिक्षक पढ़ा रहे हैं। फिर भी, मूल्यों का विचलन हो रहा है। शिक्षण संस्थानों में अंकों की अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा देखी जाती है। युवा किसी भी राष्ट्र के भावी विकास की कुंजी होते हैं। दुर्भाग्य से, भारत में युवा सामाजिक समस्याओं, हिंसा और शिक्षकों व बड़ों के प्रति अनादर की ओर तेज़ी से आकर्षित हो रहे हैं (गुप्ता, २०१६)। शिक्षक समाज द्वारा अपेक्षित शिक्षा और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में भूमिका निभाने में असमर्थ हैं। इसलिए, शिक्षकों को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। शिक्षक समाज के क्षयग्रस्त मूल्यों को पुनर्जीवित कर सकते हैं। शिक्षक चर्चा, प्रयोग और प्रदर्शन के माध्यम से मूल्यों की स्थापना कर सकते हैं। शिक्षक युवा पीढ़ी को भविष्य के आदर्श नागरिक के रूप में तैयार कर सकते हैं। शिक्षकों में प्रतिभाशाली युवाओं की पहचान करने और उन्हें शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उपयुक्त रुचियों, दृष्टिकोणों, नैतिक और बौद्धिक मूल्यों के विकास को बढ़ावा देकर उनकी पूरी क्षमता का एहसास कराने में सहायता करने की क्षमता होती है। [७]

उद्देश्य:

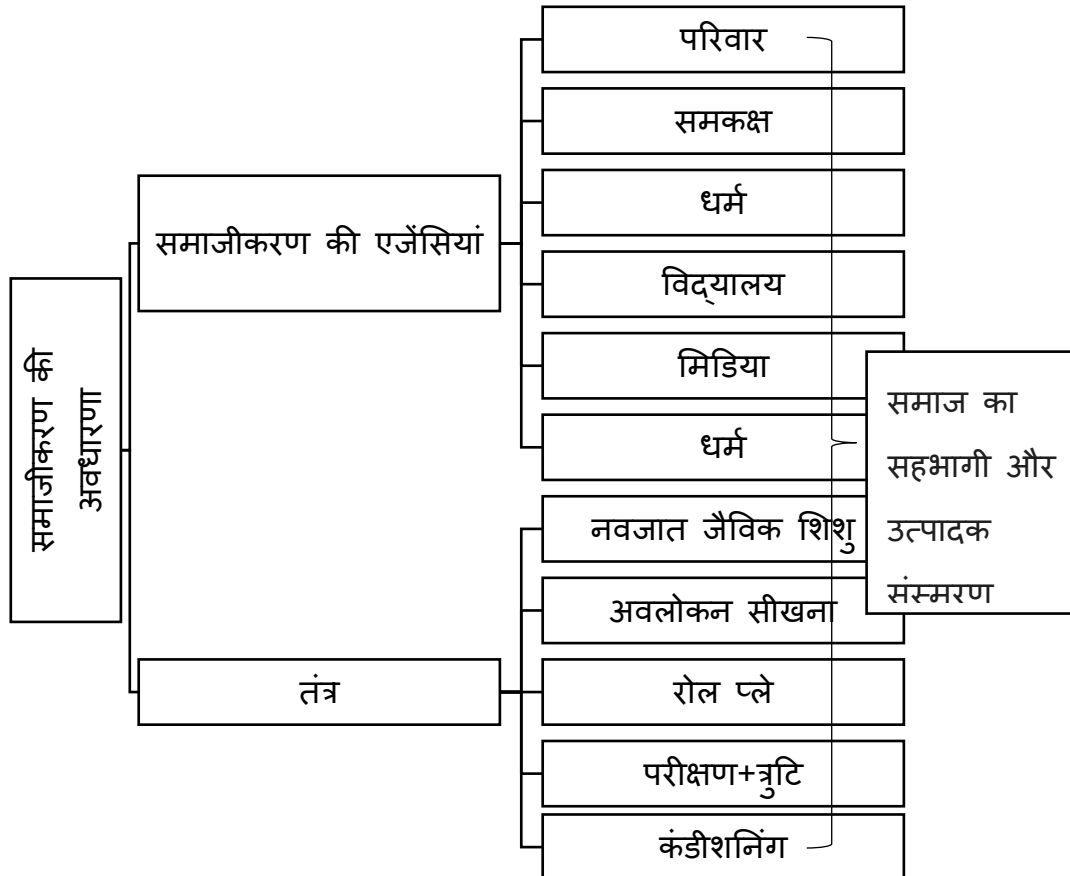
- यह वर्तमान अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। इसमें पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और वेबसाइटों से सामग्री शामिल है।
- मूल्यों को विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका

अनुसंधान क्रियाविधि:

यह अध्ययन अन्वेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध पत्र को तैयार करने में प्रयुक्त आँकड़े द्वितीयक प्रकृति के हैं, जिन्हें विभिन्न प्रकाशित स्रोतों से एकत्र किया गया है। इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए प्राप्त आँकड़े विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और प्रासंगिक वेबसाइटों से लिए गए हैं।

परिणाम और चर्चा:

समाजीकरण की अवधारणा;



चित्र १: समाजीकरण की अवधारणा

समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति समाज में एक उत्पादक और सहभागी सदस्य के रूप में रहने के लिए मूल्यों का विकास करता है।

यह एक आजीवन प्रक्रिया है (गर्भ से बाहर आने से लेकर मृत्यु तक) जिसमें व्यक्ति की सामाजिक प्रवृत्तियों को आकार दिया जाता है ताकि वह अपने समाज का एक उपयोगी और उत्पादक सदस्य बने और बने रहें।

यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक नवजात जैविक शिशु अपने समाज का एक साझा और सहभागी सदस्य बनता है।

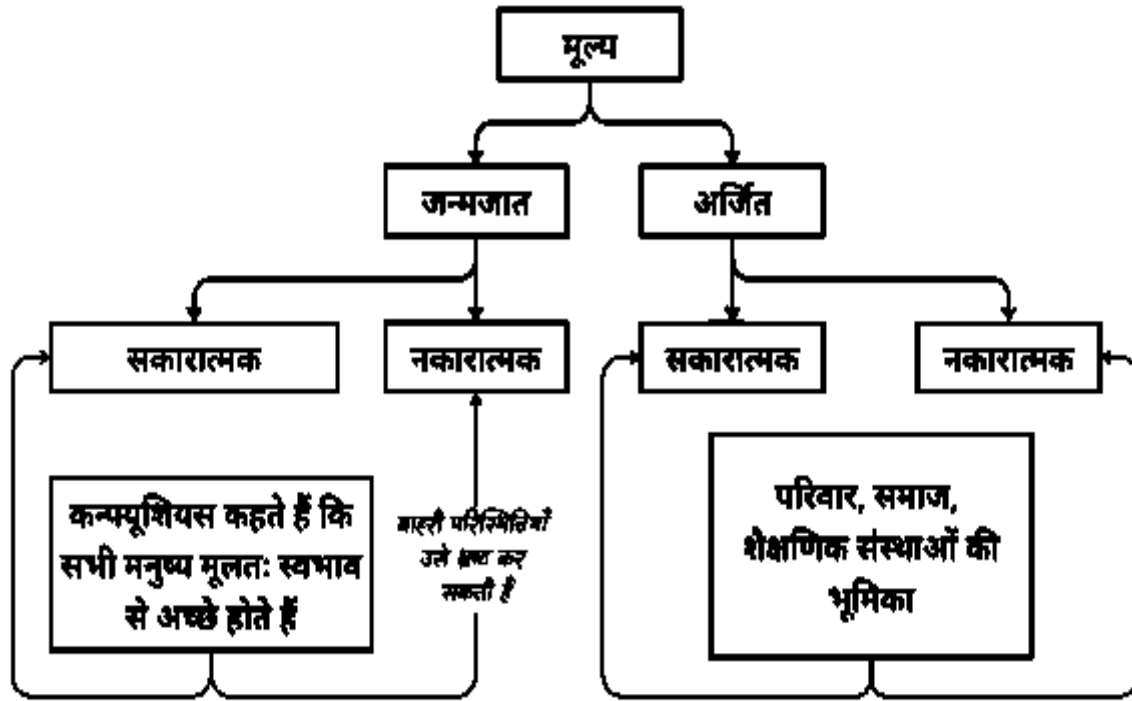
यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है।

मानवीय मूल्य:

मानवीय मूल्य वे सद्गुण हैं जो हमें अन्य मनुष्यों के साथ व्यवहार करते समय मानवीय तत्व को ध्यान में रखने के लिये मार्गदर्शन करते हैं।

मानवीय मूल्य समाज में किसी भी व्यवहार्य जीवन की नींव हैं। वे एक-दूसरे के प्रति प्रेरणा, आंदोलन के लिये जगह बनाते हैं, जो शांति की ओर ले जाता है।

बुनियादी अंतर्निहित मानवीय मूल्यों में सत्य, ईमानदारी, निष्ठा, प्रेम, शांति आदि शामिल हैं। वे मानव और समाज की मौलिक अच्छाई को सामने लाते हैं। [८]



चित्र २: मूल्य

मानवीय मूल्य उन सद्गुणों को कहते हैं जो दूसरों के साथ सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा देते हैं और सामाजिक सद्भाव में योगदान देते हैं। आवश्यक मानवीय मूल्यों में शामिल हैं:

सही आचरण: विनम्रता, आत्मनिर्भरता, साहस और समय की पाबंदी।

शांति: विनम्रता, धैर्य, आत्मविश्वास और आत्म-नियंत्रण।

सत्य: सटीकता, निष्पक्षता, ईमानदारी और ज्ञान की खोज।

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व: करुणा, क्षमा, भाईचारा और सम्मान।

अनुशासन: नियमन, व्यवस्था और नियमों का पालन।

मूल्यों को विकसित करने में परिवार की भूमिका

परिवार वह नींव है जिस पर मूल्यों का निर्माण होता है। यह बच्चे के नैतिक मूल्यों को विकसित करने में महत्वपूर्ण है।

माता-पिता और बच्चों के बीच घनिष्ठ संपर्क होता है, जो बच्चे के व्यक्तित्व को निर्धारित करता है।

परिवार लोगों तथा समाज के प्रति बच्चे के दृष्टिकोण को आकार देता है और साथ ही बच्चे के मानसिक विकास में भी सहायता प्रदान करता है तथा उसकी महत्वाकांक्षाओं एवं मूल्यों का समर्थन करता है।

परिवार में आनंदमय वातावरण से प्रेम, स्नेह, सहनशीलता एवं उदारता का विकास होगा। एक बच्चा अपने आस-पास जो देखता है उसका अनुकरण करके अपना व्यवहार सीखता है।

मूल्यों के विकास में समाज की भूमिका

समाज मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं, वे साथियों के साथ बातचीत करते हैं, विचारों और अनुभवों को साझा करते हैं।

समाज विशिष्ट परंपराओं और रीति-रिवाजों का पालन करके व्यक्ति के चरित्र को भी आकार देता है, जिसका हम हिस्सा बन जाते हैं।

ये परंपराएँ, वफ़ादारी, साहस, प्रेम और भाईचारे जैसे मूल्यों पर आधारित हैं, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं।

विभिन्न त्योहारों को एक साथ मनाना सौहार्दपूर्ण सद्भाव को बढ़ावा देता है।

इसके अलावा, विभिन्न परंपराओं और धर्मों के त्योहारों में हमारी भागीदारी समाज में व्यक्तियों के आपसी सम्मान तथा स्वीकृति को प्रदर्शित करती है।

समाज विभिन्न संस्थाओं और अंतःक्रियाओं के माध्यम से मूल्यों को प्रभावित करता है। यह निम्नलिखित तरीकों से चरित्र को आकार देता है: [९]

पहलू	विवरण	उदाहरण
समाजीकरण	साथियों, स्कूलों और धार्मिक संस्थाओं के साथ बातचीत मूल्यों के विकास में योगदान देती है।	साथियों का व्यवहार और सामाजिक मानदंड व्यक्तिगत कार्य और निर्णयों को प्रभावित करते हैं।
मॉडलिंग और अवलोकन	सामुदायिक नेता और मशहूर हस्तियाँ जैसे प्रभावशाली व्यक्ति अपने कार्यों के माध्यम से मूल्यों का प्रदर्शन करते हैं तथा सामाजिक मानदंडों को आकार देते हैं।	जो नेता ईमानदारी से काम करते हैं वे दूसरों में भी वैसा ही व्यवहार अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
मानदंड और अपेक्षाएँ	समाज स्वीकार्य व्यवहार का मार्गदर्शन करने वाले मानदंड स्थापित करता है, तथा सामूहिक मानकों के माध्यम से साझा मूल्यों को सुदृढ़ करता है।	धर्मार्थ कार्यों के लिए सामाजिक स्वीकृति व्यक्तियों को उदारता के मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करती है।

सामाजिक समर्थन और प्रवर्तन	समाज सकारात्मक व्यवहार के लिए पुरस्कार और उल्लंघन के लिए दंड के माध्यम से मूल्यों को लागू करता है, तथा मानदंडों के पालन को बढ़ावा देता है।	सामुदायिक सेवा के लिए मान्यता और पुरस्कार परोपकार की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं।
सांस्कृतिक परंपराएँ और अनुष्ठान	परंपराएँ और अनुष्ठान मूल्यों का संचार करते हैं तथा पहचान और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हैं।	त्यौहार और समारोह सामुदायिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ करते हैं।

मूल्यों को विकसित करने में शैक्षणिक संस्थानों की क्या भूमिका:

स्कूल में बच्चे एक छोटे से समाज के सदस्य होते हैं जो उनके नैतिक विकास पर बहुत बड़ा प्रभाव डालता है।

परिवार के बाद दूसरे स्थान पर शैक्षणिक संस्थान हैं, जो बच्चे के व्यक्तित्व को आकार देने में काफी प्रभाव डालते हैं क्योंकि वे अपना अधिकांश समय वहीं बिताते हैं।

शिक्षक स्कूल में छात्रों के लिये रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं और उनके नैतिक व्यवहार को विकसित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। [१०]

निष्कर्ष:

परिवार, सीखने और अनुभव के लिए पहला मंच प्रदान करके, व्यक्ति के नैतिक और आचार-संहिता को आकार देने में अपार शक्ति रखता है। परिवार इकाई में स्थापित मूल्य और सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत आचरण का मार्गदर्शन करते हैं, बल्कि व्यापक सामाजिक ताने-बाने में भी योगदान करते हैं। मूल्यों को स्थापित करने में समाज एक अपरिहार्य भूमिका निभाता है, एक व्यापक ढाँचे के रूप में कार्य करता है जिसके भीतर व्यक्तिगत और सामुदायिक नैतिकता को आकार दिया जाता है और उसका पालन किया जाता है। शैक्षणिक संस्थान समाज के नैतिक और आचार-संहिता को आकार देने में मौलिक भूमिका निभाते हैं। वे न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि एक सर्वांगीण, नैतिक रूप से जागरूक व्यक्ति के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मूल्यों को स्थापित करने में परिवार, शैक्षणिक संस्थानों और समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिवार बच्चों के लिए मूल्यों के प्रथम स्रोत के रूप में कार्य करता है और उनके विश्वासों और व्यवहारों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शैक्षणिक संस्थान पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के माध्यम से मूल्यों को स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूसरी ओर, समाज अपने सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों के माध्यम से व्यक्ति

के मूल्यों को प्रभावित करता है। इसलिए, व्यक्तियों में मूल्यों को स्थापित करने की प्रक्रिया में ये तीनों संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

संदर्भ:

१. हैचर एल. खंड २०८. शैडोफिच मीडिया, एलएलसी; २०१३. अनुसंधान में उन्नत सांख्यिकी: डेटा विश्लेषण परिणामों को पढ़ना, समझना और लिखना। सैगिना, एमआई, यूएसए। [गूगल स्कॉलर]
२. सुह डब्ल्यूएस, काहले एलआर, द रूटलेज कम्पेनियन टू कंज्यूमर बिहेवियर। रूटलेज; २०१७. उपभोक्ता मनोविज्ञान में सामाजिक मूल्य: मानव व्यवहार के प्रमुख निर्धारक; पृष्ठ १६५-१७४। [गूगल स्कॉलर]
३. ज्योतिर्मयानंद, स्वामी (२०००) [१९८६], विवेकानंद: मानव निर्माण का उनका सुसमाचार, श्रद्धांजलि की माला और उनके जीवन और समय का एक वृत्तांत, चित्रों के साथ (चौथा संस्करण), चेन्नई, भारत स्वामी ज्योतिर्मयानंद, पृष्ठ ९६०, आईएसबीएन ८१-८५३०४-६६-१।
४. ब्रिटज़मैन, एम.जे. (२००५)। चरित्र शिक्षा के माध्यम से हमारे नैतिक परिदृश्य में सुधार: स्कूल परामर्शदाता नेतृत्व के लिए एक अवसर। व्यावसायिक स्कूल परामर्श, ८. ७ नवंबर, २००८ को एकेडमिक वन फाइल्ड डेटाबेस से प्राप्त।
५. शिक्षा मंत्रालय (जून १९९९)। "हमारे लोग, हमारा भविष्य: शिक्षा क्षेत्र में मानव संसाधन के विकास के लिए एक रूपरेखा।" अस्मारा, इरिट्रिया, शिक्षा मंत्रालय (अप्रकाशित)।
६. बुश एल. व्यक्तिगत पसंद और सामाजिक मूल्य: कृषि-खाद्य क्षेत्र में पसंद। जे. कंज्यूम. कल्ट. २०१६; १६(१): १२४-१४३.
७. गुप्ता, पी. (२०१६). उच्च शिक्षा में मानवीय मूल्यों का हास: एक विश्लेषण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च-ग्रंथालय, ४(१), १६५-१७०
८. अमरजीत (२००५)। "वैश्वीकरण और पंजाबी साहित्यिक संस्कृति" साहित्य अकादमी, रविंदर भवन, फिरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली।
९. पुष्पनाथन, टी. (२०१३)। कॉलेज के छात्रों के लिए मूल्य शिक्षा। धनलक्ष्मी श्रीनिवासन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पेरम्बलूर द्वारा १ और २ फरवरी, २०१३ को शिक्षक शिक्षा में मूल्य शिक्षा के महत्व और विकास पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में। १३४-१३६
१०. शिप्रा पब्लिकेशन, डा. जै. श्री; २००८ दूध दूसरा संस्करण पेज संख्या-१